सतगुरू सत्तनाम सत्त साहिब जी सत्त साहिब जी सत्त साहिब

'वे नाम सुरति धारा' सुरति संदेश रूपांतरण शब्दों में

प्यारी हंस आत्मांओ,

अति हर्ष का विषय है कि हम सभी हंसों (आत्मांओं) के प्यारे परमपिता ''साहिब सत्तपुरूष जी'' जिन के हम सुरति अंश हैं के आर्शीवाद और कृपा से मुझे आप सभी से रूबरू होने का अवसर प्राप्त हो रहा है। अनंत काल युगों–युगों से पूर्व जब सृष्टि् रचने का भाव उनके सुरति पुण्झ में उपझा होगा, और फिर इसे कैसे अमल में लाया गया होगा, ऐसे अनगिनत भाव हम सभी के अंदर भी पनपते रहते हैं, सदियों से ये जिज्ञासा हमारे अंदर एक कौतूहल पैदा करती रही है कि ये सृष्टि् कैसे रची गई, क्युं रची गई और कौन इसके रचियता हैं अर्थात इस सृष्टि् सहित ब्रह्मण्ड रचना का मूल स्त्रोत्र क्या है ? जब कुछ भी नहीं था तो क्या था आदि आदि ? इस सब का भेद अगर कोई समूचे संसार को दे पाया है तो वह केवल और केवल एकमात्र संपूर्ण संत परमहंस 'साहिब कबीर जी' ही हुऐ हैं जिन्हें ''साहिब सतपुरूष जी'' ने सर्वप्रथम अपनी सुरति ऊर्जा से ओत–प्रोत 'सत्त दात' देकर इस धरती पर जगत जीवों के कल्याण अर्थात एक औंकार कालपुरूष की कैद से मुक्त करके पूर्ण मोक्ष दिलाने और अपने निजघर सतलोक वापिस ले जाने के लिये इस त्रिलोकि संसार जगत में भेजा था।

उनके ईलावा इस समूचे जगत में जब से सृष्टि् बनी है इस दास ('वे नाम') के अतिरिक्त और कोई भी ऐसा नहीं है जिसे स्वयं ''साहिब सतपुरूष जी'' ने सुरति द्वारा सीधे 'सार नाम दात' दी हो और वो भी दौ–दौ बार । और यही भेद समूचे जगत के समक्ष प्रकट करने के लिये दास ''साहिब सतपुरूष जी'' के आदेश अनुसार 22 मार्च, 2012 से निरंतर साहिब सतपुरूष जी की महिमां का गुणगान कर रहा है। एक बात सर्वदा ज्ञात रहे, सहज सत्त मार्ग के अनेकों संत सतगुरू इस धरा पर हुऐ जिन्होंने अपने प्रारम्भिक भक्ति काल में निरंकार भगवन की महिमां का गुणगान किया। परन्तु कुछ काल उपरांत सहज मार्ग के पूर्ण सतगुरूओं से दीक्षा दात ग्रहण करने के उपरांत मोक्ष प्राप्त किया। इन महान संतों सतगुरूओं में प्रमुख साहिब रविदास जी, बाबा नानक जी, साहिब दादू दयाल जी, दरिया साहिब जी, साहिब तुलसीदास हाथरस जी, साहिब ब्रह्मानंद जी, साहिब पल्टु जी तथा इनके ईलावा भी अन्य कंई संतों ने सहज मार्ग पथ पर चल कर मोक्ष को प्राप्त किया। परन्तु एक बार मोक्ष प्राप्त कर लेने के उपरांत इनमें से कोई भी संत सतगुरू ''साहिब सतपुरूष जी'' की महिमां का गुणगान करने के लिये पुनः इस धरा पर नहीं भेजे गये। 'संत कबीर साहिब जी' के बाद छेः सदियों के उपरांत दास को ''सतपुरूष साहिब जी'' ने उनकी महिमां गुणगान व प्रायः लुप्त हो चुकी सत्त सत्ता की पुनः स्थापना के लिये इस धरा पर भेजा। सहज भक्ति मार्ग के पथ पर चल कर कैसे जीवात्मां इस मृत्युलोक संसार से मुक्त

होकर अपने निजघर सतलोक वापिस जाये व त्रिलोकिनाथ कालपुरूष के मन रूपी मोह माया जाल से छुटकारा पाये, इस पर अपने सुरति अमृत प्रवचनों के द्वारा 'वे नाम सुरती धारा' का प्रवाह बहे जा रहा है जो अभी भी निरंतर जारी है।

और इस प्रयास में अभी तक दास की सुरति द्वारा साहिब सतपुरूष महिमां और उनकी प्रीत से ओत–प्रोत कंई भजनों, काव्यों और अनगिनत दोहों से भरे ग्रंथ रचे जा चुके हैं और साथ ही साथ इन सब की महिमां यू–टयूब चैनल 'वे नाम सुरति धारा' व अन्य माध्यामों द्वारा भी गाई जा रही है जहां पर हज़ारों–हज़ारों प्रवचनों व गायन की श्रृंखला केवल और केवल 'सहज भक्ति मार्ग' पर चल कर 'सत्त का भेद' व सत्ता जो इस संसार में कहीं लुप्त सा ही हो गया था उसे फिर से दास द्वारा ''साहिब सतपुरूष जी'' स्थापित कर रहे हैं क्योंकि सत्त की सत्ता को कौन मिटा सकता है ! इस उपलक्ष्य में दास द्वारा जो दोहों के रूप में साहिब वाणी गाई और रची जा रही है उसका बड़ा सुन्दर वर्णन सभी ग्रंथों में 'वे नाम सुरति धारा' के प्रवाह में समूचे जगत को प्राप्त हो रहा है। ये दास खुद कुछ भी नहीं लिख रहा, जो कुछ भी लिखा व रचा जा रहा है वह ''मेरे साहिब सतपुरूष जी'' ही की कृपा से हो रहा है उन्हीं का तदरूप बन कर दास इस संसार को जगाने की चेष्टा मात्र कर रहा है, इसलिये मेरी वाणी मेरी ना होकर केवल और केवल हमारे प्यारे परमपिता ''साहिब सतपुरूष जी'' की ही सुरति धारा है जो दोहों और प्रवचनों के रूप में मुझ 'दास' द्वारा जगत जीवों की ओर प्रवाहित हो रही है व कलमबद्ध हो रही है। यूं तो सुरति भेद सुरति द्वारा ही ग्रहण किये जा सकते हैं परन्तु जगत जीवों के कल्याण के लिये 'दास' इस सत्त सुरति अमृतमयी प्रवाह को शब्दों में रूपांतरण करने का प्रयास मात्र कर रहा है ताकि ''साहिब सतपुरूष जी'' की चेतन सुरति से सभी जीव चेतन होके मोक्ष अर्थात अपने मूल सतलोक में जा समायें और इस आवागमण के चक्कर से सदा के लिये मुक्त हो जायें।

'सुरति और सार दात' के संदेश से भरपूर ये दोहों और भजनों से भरे ग्रंथ उसी भेद को उजागर कर रहे हैं जिस भेद को पाकर जिज्ञासुजन इस दुर्लभ मानस जीवन के एकमात्र लक्ष्य 'पूर्ण मोक्ष' को प्राप्त कर सकता है, और किस विधि से ये सब संभव हो पाता है आईये इस महान ग्रंथ **''वे नाम सुरति धारा''** को आत्मसात करके इसके भावार्थ को समझें और प्रतिदिन इन दोहों के अंदर छिपे रहस्यों को समझ कर अपने जीवन में उतार कर इस दुर्लभ जीवन को सार्थक करें और निराकार काल भगवन से छूटकर अपने परमपिता ''साहिब सतपुरूष जी'' के धाम हंसा निजघर अमरपुर सतलोक वापिस लौट चलें और अपने निज मूल **'सत्त'** में समा जायें।

सभी हंसात्माओं के मोक्ष हेतु प्रयासरत,

'वे नाम' परमहंस

'वे नाम सुरति धारा' विषयों के सुरति भावार्थ

प्यारे पाठको,

ये सत सुरति से ओत–प्रोत दोहे सतगुरू 'वे नाम' परमहंस साहिब जी ने सभी जीवात्मांयें मोक्ष पथ की पथिक बनें, इस आध्यात्मिक उद्धेष्य जगत जीवों के कल्याण के भाव से शब्दों में पिरोया गया है। सहज सतमार्ग के संत सतगुरू अपनी भक्तियां मन माया (जगत पदार्थों) का प्रयोग ना करके सुरति सूं करते हैं। हंसा (आत्मां–मन=हंसा) मूलतः काया, आकार व स्पर्श से परे सुरति रूप है। जगत में हम जो भी भक्तियां, कार्य व गतिविधियां करते हैं वह सब पूर्णतः मन तथा माया रूपी जगत पदार्थों का प्रयोग करके करते हैं सुरति तो पूर्ण आत्मिक अवस्था है, इस अवस्था में मन माया का लेष मात्र भी अंश नहीं होता। जहां एक ओर जगत भक्तियां मन व शाब्दिक ज्ञान का प्रयोग करके की जाती हैं वहीं दूसरी ओर सहज सतमार्ग की भक्ति व ध्यान केवल सुरति सूं किया जाता है। यह आलोकिक दोहों से भरपूर ग्रंथ ''**वे नाम सुरति धारा**'' भी साहिबन सत सुरति सूं ओत प्रोत है। वर्तमान काल में सहज सत मार्ग के एकमात्र पूर्ण संत सतगुरू 'वे नाम' परमहंस जी सुरति से भरी अमृतमयी दात रूपी धरोहर को सुरति से ग्रहण करके, जगत जीवों तक पहुंचाने का भाव लिये इसे शब्दों में रूपांतरण कर रहे हैं। सुरति तो मन काया से परे मूलतः हंसात्मां का विषय है जो जगत जीवों के कल्याण के लिये कलमबद्ध होने का प्रयास भर है।

इस जगत में स्वयं में विद्यमान चेतन सत्ता को जानने की जिज्ञासा सदा से मनुष्यों में रही है। मानव समाज कितना भी उन्नतशील क्युं ना हो जाये वह कभी भी दुख व कष्टों से मुक्त नहीं हो सकता। वेज्ञानिक व भौतिक सुख साधन मानव की दिनचर्या को सुग़म तो बनाते ही हैं परन्तु कुछ और पाने की अभिलाषा को भी तीव्र करते जाते हैं, जैसे कोई कितना भी धनवान और सामर्थवान क्युं ना हो परन्तु उसकी समस्त संसार को अपने वशिभूत करने की ईच्छा कभी समाप्त नहीं होती। जहां एक तरफ इस भौतिक जगत में अधिकांश मानव जीवनचर्या की आपाधापी में इतने व्यस्त हैं कि उनको सारा जीवन स्वयं व मालिक को जानने की तरफ कभी ध्यान ही नहीं जाता। वर्तमान काल में इस त्रिलोकि जगत में मानव अपने आप को अत्यधिक उन्नतशील और ज्ञान का ज्ञाता मानता है, प्रत्येक मानव चाहे वह किसी भी धर्म संपद्रायः से क्युं ना जुड़ा हो पर सभी के सभी जीवात्मां उस एक ही मालिक की संतान हैं तथा एक दिन इस नश्वर संसार को छोड़ के जाना है ऐसा मानते हैं। परन्तु दूसरी तरफ मानव का आचरण तो नित्य प्रतिदिन गिरावट की ओर ही अग्रसर है, अपने आप को सभ्य कहलवाने वाला आज का मानव अपने निज स्वार्थ साधने में इतना व्यस्त है कि उसे दूसरों के दुख दर्द व क्लेशों से कोई लेना देना नहीं। अपितु अपने मतलब साधने के लिये दूसरों का अनहित व विनाष करने से भी परहेज़ नहीं करते।

इस जगत में हर जीव में आत्म का वास है, प्रायः सारा जगत ही मानता है आत्म निर्लेप दुख सुख से रहित अजर अमर अविनाषी है। जहां एक तरफ आत्म अजर अमर अविनाषी दुखों से परे है दूसरी ओर अगर देखें तो जगत में अधिकांश जीव आत्मांयें दुखों व कष्ट क्लेशों से ग्रसित हैं। इन्सान इन दुखों से मुक्ति के लिये किसी ना किसी ईष्ट की पूजा किये जा रहा है, अन्जाने वश ये सारी पूजा भक्तियां उसे और भी उलझनों में उलझाये जा रही हैं। जिन जिन ईष्टों की वह साकार अथ्वा निराकार रूपों में भक्तियां किये जा रहा है वे सभी ईष्ट मन व माया रूप ही हैं। जहां मानव ये भक्तियां इन कष्टों से निजात पाने व अपने सुखों की प्राप्ति के लिये कर रहा है अन्जाने वश वहीं ये भक्तियां उसे तत्कालिक सुखों के एवज में और भी पतन की ओर ले जा रही हैं। अज्ञान वश संसारिक चकाचौंध के लौभ से प्रभावित हुआ मानव अपने आप को तन व त्रिलोकि का अंश ही समझ बैठा है जो उसके दुखों का मूल कारण है।

जगत में एक ओर जहां अनगिनत गुरू सदगुरू पथ प्रदर्शक स्वयं भी निराकार भगवान व उनके देवी देव रूपों की भक्तियों में उलझे हुऐ हैं तथा दूसरी ओर अपने अनुयायियों को भी इन्हीं भक्तियां में ही उलझाये जा रहे हैं। वर्तमान संपूर्ण मानव जगत का अपने आप (आत्म) को ना जानना ही उसका सबसे बड़ा भ्रम है, वह काया ना हो के उस चेतन सत्ता का स्वामी आत्मां (हंसात्मां) है। वर्तमान में मानव जिन ईष्टों की पूजा भक्तियां कर रहे हैं वह निराकार भगवन सर्गुण (देवी, देव व ईष्ट रूप) व निर्गुण (आकार रहित, अंर्तमुखि हो ओईम, अल्लाह, ईश्वर ईत्यादि) रूप में इन्हीं भक्तियों को ग्रहण करते हैं, तथा मानव जिन–जिन रूपों में उनकी भक्तियां करते हैं वह उन्हीं रूपों में प्रतक्षः व अप्रतक्षः रूपों में प्रकट होकर उनकी भक्तियों को और भी दृढ़ करते हैं। निरंकार भगवन एक औंकार इस त्रिलोकि के रचियता हैं तथा इसका संचालन भी सुचारू रूप से कर रहे हैं।

जीवात्मां इस त्रिलोकि से परे चौथे लोक के स्वामी परमपिता परमात्मां (साहिब सत्तपुरूष जी) का निज अंश है। साहिब सत्यपुरूष जी अजर, अमर, अविनाषी, आनंदमयी, चेतन सुरति पुण्झ हैं। इसी कारण आत्मां साहिब सत्यपुरूष जी का अंश होने से अजर, अमर, अविनाषी, आनंदमयी, चेतन सत्ता है, जिसकी ऊर्जा से ही सारा त्रिलोकि जगत चलायेमान है, निराकार भगवान द्वारा रचित भौतिक त्रिलोकि जगत व मन निर्जीव हैं, ये त्रिलोकि जगत और निराकार रूपी मन भी इस आत्म चेतन सुरति ऊर्जा से गतिशील व कार्यरत हैं। चूंकि बिन आत्म–सुरति ये त्रिलोकि संसार निर्जीव है जिसे कार्यशील व चलायेमान रखने के लिये ही ये सारा मोह माया प्रपंच रचा गया है, जिस कारण पूर्ण चेतन सुरति से भरपूर होने के बावजूद भी 'आत्मां' भ्रमित हुआ अज्ञानतावश अपने निज रूप को भुला हुआ अपने आप को इसी मोहनी त्रिलोकि का ही अंश तन व मन समझ बैठा है। यही अज्ञानता ही मानव के सब दुखों व कष्टों का मूल कारण है।

इसी अवस्था से जीवात्मां को पूर्णतः मुक्त करने के लिये सहज सतमार्ग के पूर्ण

सतगुरू सदा से ही प्रयासरत हैं। वर्तमान काल के पूर्ण सतगुरू 'वे नाम' परमहंस साहिब जी जो निज चेतन सुरति से ओत–प्रोत, जगत में साहिब सतपुरूष जी का तदरूप हैं। साहिब सतगुरू 'वे नाम' परमहंस जी जगत जीवों को सत सुरति से भरे अमृतमयी प्रवचनों, भजनों, काव्यों तथा दोहों के रूप में सत चेतन सुरति ऊर्जा प्रदान करके मोक्ष दिलाने हेतु निरंतर प्रयासरत हैं। यही कारण है कि हम सब हंसात्मांओं के परमपिता ''साहिब सतपुरूष जी'' वर्तमान काल में अपने तदरूप सतगुरू 'वे नाम' परमहंस साहिब जी द्वारा, हम सभी हंसात्माओं को इस त्रिलोकिनाथ कालपुरूष एक औंकार भगवन से छुड़ा कर अपने निजघर सतलोक वापिस ले जाने के लिये साहिबन सुरति से भरे इन आलोकिक ग्रंथों को रच रहे हैं ताकि इन्हें आत्मसात करके हम सब हंसा अपने एकमात्र लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त हो आवागमण से सदा के लिये मुक्त हो जायें।

नोट : **'वे नाम सुरति धारा'** इस ग्रंथ के विषयों का भावार्थ :–

1 खर अक्षर निःअक्षर

खर अवस्था में जीने वाला मानव पूर्णतः मन माया अनुसार केवल निज स्वार्थ के लिये काम करता है जबकि अक्षर अवस्था वाला मानव संसारिक शाब्दिक ज्ञान को अर्जित करके भौतिक सुख संसाधनों को पाने में ही अपना जीवन व्यतीत कर देता है। खर, अक्षर से परे निःअक्षर अवस्था मानव के मूल लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त करने के लिये अति उत्तम अवस्था है जिसमें मानव बहुत कम

खर का शाब्दिक अर्थ तिनका है तथा इसका संस्कृतिक भाव 'मूर्खता' है। प्रायः सारा मानव–समाज इस बहुमूल्य समय को अपने व्यर्थ के कार्य और अर्थहीन वार्तालाप में अपनी मान बड़ाई हेतु व्यर्थ नष्ट किये जा रहा है। मानव जन्म तो अति अनमोल एवम क्षण भंगुर है जिसका एकमात्र लक्ष्य अपने मूल लक्ष्य साहिब सतपुरूष लोक में जा समाना है अर्थात मोक्ष को पाना है। इस धरा पर मानव जीवन ही पंच तत्व से परिपूर्ण है जिस कारण मानव तन में जीवात्मां पूर्ण शक्तिवान अर्थात अपनी सुरति ऊर्जा से ओत–प्रोत होता है। मानव अपने स्वयं के आंतरिक हंसा स्वरूप को ना पहचानते हुऐ इस जगत मन माया के अधीन हुऐ अनमोल समय को व्यर्थ ही गंवाये जा रहा है। संसारिक लुभावने भौग पदार्थों को एकत्र करने की चाह और लौभ लालसा में सत्य से पूर्णतः विमुख होकर अपने लिये अनंत अगामी जन्म जन्मांतरों का आधार तैयार किये जा रहा है। इसी अज्ञानता वश मानव अपनी हंसा सुरति साहिबन सतपुरूष अंश को भुला हुआ अपना ही पतन किये जा रहा है।

'**अक्षर** अर्थात शब्द' वो शाब्दिक ज्ञान जिससे जगत में धन व समृद्धि को अर्जित किया जा सकता है। नाना प्रकार के संसाधन अर्जित करके मानव जगत में अनेकों उपलब्धियों को हासिल करके वैभवशाली जीवन व्यतीत कर सकता है। इस जगत के रचियता निराकार भगवन भी शब्द से ही उत्पन्न हुऐ तथा जगत के सभी देवी देव भी उन्हीं का रूप होने के कारण शब्द से ही उत्पन्न हुऐ हैं। निराकार भगवान व सर्गुण रूपी देवी देवताओं की भक्तियां भी अक्षरांश

भक्तियां हैं क्योंकि निराकार के सभी रूपों की भक्तियों का विधि विधान ग्रंथों, उपनिषधों व धार्मिक पुस्तकों में वर्णित होता है। जिसका ज्ञान अर्जित करके जगत में गुरूआजन पथ प्रदर्शक व रहनुमां प्रवचन तथा अपने अपने ईष्ट का गुणगान गाते हैं अथ्वा इन्हीं शाब्दिक ग्रंथों से मार्ग दर्शन प्राप्त करके अपनी अपनी भक्ति में उच्च परिकाष्ठा को प्राप्त होते हैं तथा अपने अनुयायियों और शिष्यों को भी यही शाब्दिक ज्ञान ही प्रदान करते हैं।

निराकार के निर्गुण भक्तियां करने वाले गुरूआजन पंच शब्द जो दीक्षा में अपने शिष्यों को देते हैं तथा निराकार भगवन के सर्गुण भक्तियां करने वाले गुरूआजन अपने शिष्यों को जो गुरूमंत्र अथ्वा शब्द दीक्षा में देते हैं यह दोनों ही पूर्णतः अक्षर ज्ञान श्रेणी में आता है। यह अक्षर ज्ञान तो वेदों, ग्रंथों व धार्मिक पुस्तकों में पहले से ही वर्णित होता है। अक्षर ज्ञान मूलतः मानव में अहम की वृद्धि करता है अर्थात अहम का दूसरा नाम ही 'मन' है। मन का शाब्दिक अर्थ काया व संपूर्ण लुभावना त्रिलोकि विस्तार ही है। निराकार भगवन मानव के भीतर चेतन–सत्ता 'हंसात्मां' को भ्रमाने हेतु 'मन' रूप में स्वयं ही विद्यमान होते हैं तथा भौतिक रूप संपूर्ण त्रिलोकि–मोहनी–माया भी निराकार भगवन का 'मन' रूप ही है। यही एकमात्र प्रमुख कारण है कि 'मन', काया व त्रिलोकि जगत के पदार्थों द्वारा की गई सभी भक्तियां जीवों में निरंकार भगवन कालपुरूष की भ्रमित करने वाली लुभावनी माया को और भी सुदृढ़ करती हैं। मानव, नीच कर्म फल अनुसार नर्कों, पाताल लोकों, प्रेत योनियों और भुगत योनियों को प्राप्त होता है। वहीं पर श्रेष्ठ मानव निरंकार भक्तियों के उच्च शिखर तक भी क्युं ना पहुंच जायें, वे 'मन' से पूर्णतः कभी भी मुक्त नहीं हो सकते। अपितु अपनी भक्तियों के फलस्वरूप अल्प मुक्ति अर्थात पित्रलोक, स्वर्गलोक तथा सुन्न लोकों में ऋद्धि सिद्धियों से युक्त भौगों को भौगते हैं। भक्तियों का फल क्षीण होने पर मानव पुनः मृत्युलोक में जन्म लेते हैं।

नोट

2 वासनात्मिक प्रेम से आध्यात्मिक प्रेम की ओर

3 सहज से अंर्तमुखि

4 पंच शब्द पंच तत्व

5 आहार से शुद्धता और पतन

6 सात चक्रों की महिमां

7 दस वायुओं की महत्वता

8 तन तजने का भेद

9 अनिल पक्षी

10 अल्प मुक्ति से पार मोक्ष द्वार

11 संत मत्त की महिमां

इति श्री

—0—